पहला भाग-सिद्धांत-निष्पण

पहला अध्याय

नयी कहानी की मुख्य प्रवृत्तियाँ: रचना-प्रक्रिया के संदर्भ में
पहला अध्याय

नयी कहानी की मूलभूत पुत्रित्वायां : रचना-प्रकीर्ण के संदर्भ में

नयी कहानी का प्रारंभिक युग 1850-60 के आसपास माना जाता है। नयी कहानी के कहानीकारों ने समृद्ध सामाजिक को व्यक्तित्वत सामाजिकता के ख्यातनामाध्यम में देखे-पाये की दृष्टि की है। इन कहानीकारों की रचना-प्रकीर्ण में अम आदमी के जीवन में उभरे अन्तरिक्ष दृष्टिकोन होते है। ये कहानीकार त्योहार को उसके सामाजिक

परिवेश, नासिक अन्तर्दृष्टि तथा व्यावहारिक की जीवन के तकालीन तथा अन्य अवधारकार तरीके से संकेत करने वाले दृष्टिकोन के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने बदलते हुए विश्वेश में नासिक वाणिज्य संबंधों का जीतता तथा भागपत्तन यह देखते हैं। संबंधों में तनाव तथा विघटन की

दृष्टिकोन्यां देखते हैं। उन्होंने अनुभूति रिवाज, विश्वेश तथा अन्तरिक्ष निष्क्रियता में अधूरा तरह की घटना को विश्वास को रहा है, उसके पास नई दृष्टि की विधि नया रह गया। दिवांगी की भौतिक तथा ऊर्जा दृष्टि का रहा है। वह नयी दृष्टि विश्वास, विश्वेश अन्तरिक्ष, भागपत्तन को सत्यनाराण में रहना जरूरी करता जा

रहा है। नयी कहानी के व्याख्याताओं ने अपनी समस्त अर्थशास्त्र तथा सामाजिक परम्परा को पूर्वाःसुलभता में रख कर अलग अन्य सबसे भागत पर मानव की तिथितिपति तथा स्थिति को पूर्वांकुशता निर्देश करता है। वह मानवीय संबंधों से तथा उसकी प्रतिक्रिया से अपने को प्रतिक्रिया खोज करता है। उनकी अनुभूति करता रहता है। अन्य रचनाओं में वह अनुभूति विद्या अनुभूति को ही अनुभवता करता रहता है। कहानियों में वह "वह" को चोट कर "मैं" की तात

करने लगा अर्थात् उसे दृष्टिकोन सत्य मुख्यता होने लगा। 2 कहानियों आत्मा-मुख्य से सुझाव दिए। कलामूलकों को भी जीवन मूल्यों में बदल देना नयी कहानी का मूलभूत प्रमाण बिना बन गया। नन्दी कहानी के कहानीकार ने कलाकृति में

अनुभूति, विद्या, विश्वेश, स्थिति को नये दंग से व्यावहारिक निर्देश दिना। व्यंग्य-केन्द्रीयता,

1. देवीशंकर अवस्मी, नयी कहानी संदर्भ और पुरुषत्व, दिल्ली; राजकमल पुस्तक 1966, पृ 99-102.
2. वहीं पृ 103.
रेखाकर्ता, अनुभूतियों, संवेदना, दृष्टि-दृष्टि और क्षण हुई भाषा-शैली और विचारोंके आधार पर कहानी के बाहरी तत्त्व हैं, नयी कहानी में आंतरिक रचना प्रक्रिया के पौरीतांतरक उभरकर सामने आते हैं। अपने मूल्य में कहानी की सामाजिकता की समस्या नयी कहानी के लेखक के "रचना प्रक्रिया" की समस्या है, जिसी रचना शुरू करते समय रचनाकार खुद कहानी लेखक रचना के विकास के अनुसार करते हैं। इस पीढ़ी के लेखकों के अनुभवों को नयी संवेदनाओं के लाभ, नयीन के संबंधवाद के, नये लोंगी तथा नयी कहानिया के साथ जोड़ कर अभिशापित रखता है।

देवीशंकरायस्थी के अनुसार:- "नयी कहानी की रचना-प्रक्रिया में निर्मूल संघर्ष दिखायी देता है। पहला संघर्ष है- अभिशापित का, दूसरा आत्मवेतन का लेख तीसरा संघर्ष है-- मानव की समस्याओं की अनुभूति ग्रहण करते हुए अपने जीवन के अनुभवों को प्रयासक और निर्मल बनाने के लिए प्रति गया संघर्ष।"

निर्देशित: नयी कहानी की प्रभुतितवादी रचना प्रक्रिया के दौरान लेखकीय अनुभव के दायरे से वो का संवेदनात्मक धरती पर नवीन सादृढ़त अभिशापन के साथ अभिशापित होती है। लेखक कौन-कौन से अनुभवों को अनुभूत कर रचना-प्रक्रिया की आंतरिकता को पूर्ण करता है, यहीं वह जानना अपेक्षित है, जो परिभाषित किया गया है।

अनुभवों की लिखता
----------

नयी कहानी में रचनाकार की अनुभूति-शक्ति उसकी शृणु-प्रतिभा को पूर्ण करती है। लेखक शृणु-प्रतिभा को बनायें रहने के लिए अपनी अनुभूति-शक्ति को दैनिक जागरूक रखता है। यह अपने अनुभूति-शक्ति को समस्त प्रमाणिका के साथ प्रतिशोधबिमत करता हुआ समय के बड़े सत्य और परिवेश के प्रमाणित दर्जन करता है। परिवेश की प्रवृत्तिशक्ति और अनुभूति की प्रमाणिका का सामाजिक पहली बार नयी कहानी की रचना-प्रक्रिया में प्रतिशोधबिमत हुआ है।

नयी कहानी के रचनाकार की रचना प्रक्रिया अनुभवों से संबंधित होती है। इन अनुभवों को वह परिशोध के भर्ती करता है। जीवन भरी हुई वह एक परिशोध से गुरूत से वह नये अनुभव के प्राप्त हो जाते हैं। यह अनुभव कृति उसके अन्य होते हैं।

1. बदननाथ मदन, हिंदी कहानी अपनी गुणानी, दिल्ली: राजकमल प्रकाश 1968 पृ-35.
दूसरों के। वह दूसरों के अनुभवों को स्वयं अनुभव कर रहा द्वारा व्यक्त करता है।
अतः कहानी को पढ़ना वाला अनुभव-पूर्व वातावरण स्मृति में परिवेश से ही पनना है।

नयी कहानी के कहानिकारों ने अपनी रचना-प्रशिक्षा में लक्ष्यातीत समय को हमादानी ला प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है। क्यबाध परिवेश में उन्होंने "व्यक्ति" को देखा। व्यक्ति को कहानी के केंद्र में रख कर उस की "निजता" को महत्त्व दिया। नयी परिस्थितियों के कारण व्यक्ति की मानसिकता बदली। हालांकि, उसके सम्बन्धों में बदलाव और जीवन संघर्ष अंत गई। वह बदलते संबंधों के विषय में फूल हुआ।

हां। पिता-पुत्र, मां-पुत्र, पिता-पत्नी के संबंधों में प्रविष्ट हुआ, आत्मीयता समाप्त हो गयी। लेकिन निर्मित विषयों को अनुभूत कर, अभिव्यक्त रखा। इस अभिव्यक्ति में उसका साधन 'द्वैतकर्म तथा रोमानी हो उठा।' जिससे नयी कहानी के कहानिकार के रचना-प्रशिक्षा का मूल मतलब बन गया -- बदलते जीवन से मानव-भीतर खिलाया, लीला, घटना, उपयुक्त मयाने वाली शक्तियों से जुड़ता तथा उन्हें धुनाती देना। अनुभूति की प्रामाणिकता के नाम पर उनकी कहानियों में व्यक्तित्व, तंत्र, संदर्भ आदि का जोर बढ़ाने लगा। कहानिकार ने विद्वद्धक वैसे परिवेश को ही अपनी रचना-प्रशिक्षा का आधार बनाया। मानवीय संबंधों से दूर कर उसने और कोई ढूंढते लाज नहीं की। विश्राम, विघटन और ढूंढते संबंध, यही उसके यारों तरफ के परिवेश में व्याप्त थे, उससे ही लेकर अनुभव प्रभाव करता रहा।

लेकिन रचना करने समय अपने जीवन-साहित्य से अनुभवों को भी हुनाता रहता है। उन अनुभवों को रचना ला देने के लिए त्यस प्रकार रहता है। जब वह अनुभव तय हो जाते हैं, तो कहानी-स्मृति में परिवर्तित होते हैं, तिसरे रचना-प्रशिक्षा के अन्दर प्रविष्ट कर जाते हैं। अतः रचना रचनाकार के संदर्भ की बजाए है। जीवन-साहित्य के साथ-साथ वह रचना की खोज करता रहता है।

नयी कहानी का कहानिकार फिर नूतन जीवन-सत्ता को अपनी रचना-प्रशिक्षा में समृद्धिशिल करता है। यह ऐसे तत्त्व की प्राप्ति, स्पष्टिकात्मक से वक्तव्य नहीं शीघ्र।

1. श्लोमनारायण लाल, हिंदी कहानियाँ की शिल्प-विविधता का विकास, ललाटपुर; साहित्य भवन, 1974; पृ 337-338.
नयी कहानी के स्पष्टतः संसार में निरनत बदलते सन्दर्भों से नवीनता उत्पन्न हुई है। स्वतंत्रताप्राप्ति व्यक्ति-की-नन्दत समाज-बोध विकसित हुआ। इस समाज-बोध में व्यक्ति की परम्पराओं, आदर्शों तथा मूल्यों का निषेध जीवन-अन्धकार की विकसित, विभाजित, अवरुध्दश एवं विकृति जो सुझ कर हो गया। नयी कहानी के कहानीकारों ने इस नये भाव-बोध को नवीन दृष्टि हृदयभावित के नये आयाम, विश्व, अवूढ़-संवेदक द्वारा अभिव्यक्तित किया। उन्होंने दैवीयता व्यापार को कहानी के वेदना में रख कर सामान्य व्यक्ति के जीवन-प्रवास के संबंध पर लेख दिये हैं।

1. देवीकृष्ण अवस्थी, नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति, पुस्तक, पृ-154
उन्होंने मानव के जीवन-यात्मक में पन्ने अनजानीय, अनिवार्य नकार, आतंक मृत्यु का बोध, मौद्रकम, आक्रोश तथा जब का भी वर्ण पिया है। अपनी पितल दूरिष्टि द्वारा उन्होंने मानव-जीवन को प्रभावित करने वाली सामाजिक दिशाओं की ग्रथाण्य की।

यात्मक दंग दे घारे तरफ उन्होंने लोगों को निर्भरित के साथ चेतना में मुक्ति पिया।

व्यक्ति को प्रभावित करने वाले हारे तरफ के बिखराय, विश्वास को भी लेख विश्वित करते गये, जिससे उन की दूरिष्टि व्यक्ति के सामर्थ की ओर उन्मुख हो गयी। एक व्यक्ति के माध्यम से उन्होंने सामूहिक बात की। अतः लेखकों ने व्यक्ति के "अन्तर" का यात्मक-यथार्थ रचना-धरातल पर उतारा।

लेखकों की पितल-दूरिष्टि अपने अनुभवों को रचना-प्रविष्टि का माध्यम बनाती रही। उन्होंने अपने अन्तर्तन का तटस्थ दृष्टि को तरह अपलोकन किया। इस अप-लोकन धरातल में अनुभूति अनुभवों को उन्होंने रचना-धरातल पर प्रविष्टि किया। इस संबंध में नयी कहानी की नवीनीता सामाजिकता के स्थान पर व्यक्ति की पतना की बजानी बनती है।

नयी कहानी की मूल्य नवीनीता "पितल-प्रविष्टि" है। कहानी में पितल की नवीनीता ध्वनि के नवीन प्रविष्टि को जन्म दिया। नयी कहानी का रचनाकार जीवन और तात्त्विक के यात्मक को पितल-दर्प पर आत्मसातू रूपक तरह अनुभवकर करता रहा। वह निजी जीवन के अनुभवों को भी पितल-रत्न पर आत्मसातू कर अभिव्यक्ति करता रहा।

परिवर्तन पारिवर्तीयों ने नयी कहानी के प्रशिक्षक ग्रस्त में काफी परी-वर्तन लाते कर नवीनीता स्थापित की। व्यक्तियों ने पतना-रत्न पर प्रभावित जीवन के मानवीय मुख-दृश्क के भिन्नता नये कलात्मक दंग के की, इस पर नवीनता तथा बीतता का आत्मसातू हुआ। शिल्प की दूरिष्टि से हम की रचना-प्रविष्टि संबंध नवीन हो गयी। पहले कहानी में संस्कृत होते हैं जबला जबला पूर्ण स्थान से संभादित हो गयी। नवीन शिल्प-पारिवर्ती, साहित्यिकता, विद्वान, प्रौद्योगिकी प्रज्ञा द्वारा लेखक ने अपने अनुभव सम्पूर्ण रूप से प्रविष्टि। इस प्रवर्तन ने नयी कहानी के रचनात्मक संसार में नवीनता ला दी। भावुकता की बौद्धिकता का क्रांति पहाड़ के भाव पर भी कहानीकारों
ने आश्वासन कर दिया। कहानी में अब वेल्ड वर्तन ही नहीं, प्रयोग भी होते लगे। अपनी श्रद्धाधिकृत की प्रभावोत्पादकता के कारण कहानी की रचना-प्रणालिया का मूल्यांकन सत्य माना जाने लगा।

प्रेमपाल ने नवी कहानी के नयनपन के प्रति अपना मन्तव्य स्पष्ट करते हुए लिखा—“नवी कहानी का नयापन जीवन-प्रूक्षेत्र का, विवाह-प्रुक्षिया का, विवेक और तंत्र का नयापन है। नवीनता के प्रति आमेश, गुर-बोध के प्रति सद्भाव, पोरिस्टिलियों से व्याख्यात, व्याख्यातक देखना की प्राधमता, परिवर्तन मूल्यों के प्रति स्वीकारात्मक दृष्टि परिवर्तित होती है।

निरक्षित: नवी कहानी की रचना-प्रणालिया का नयापन धिंगतन को प्रभावित बनने वाले अनुभवों का नयापन है। इस अनुभव-संसार में कभी लेख वह स्वयं होता है तो कभी परिवेश-प्रभावित सामान्य म्यूजिक। लेकिन इन अनुभवों को नवीन पिल्ले-पत्रित ला सकैकिएक भाषा द्वारा अभियोजन कर, नवीनता का परियोजना देता है।

1.3 संदेशन का स्तर

स्वतंत्रता पश्चात् बदलती मानवी जीवन-पद्धति, पोरिस्टिलियों तथा परि-
वेश ने, लेख के "पितामह" को बदल दिया। बदलते परिवेश का मूल प्रत-जीवन
का यथार्थ-बोध लेख की पितामह प्रृक्षिया पर प्रारूप प्रभाव डाल कर, उसकी रचना-
प्रणालिया को परिवर्तित कर रहा था। यह यथार्थ विद्रोह सध्य तथा निम्न वर्ग का
है जो अपनी शक्ति से आज के दूरदूर संकट को अनजाने ढ़ेर रहा था।

निराशा

के अंत निर्यात को भागता हुआ मानव निराशा और अवसादसमुख जीवन स्थिति करने
लगा।

1. रामरूपर गुप्त, स्वाटःस्वाटः - हिंदी कहानी, पिलानी; पिनत प्रकाश, 1962
2. हुँ प्रेमपाल, नवी कहानी में व्याख्यात, दिल्ली:भानना प्रेस, 1980, पु-34
3. धर्मकेशराव, हिंदी कहानी समीप और सत्त्व, झालखंड; राजीव प्रकाश,
1985, पु-63-64
4. दुरेश रिहाया, नवी कहानी की मूल संस्कर, दिल्ली; भारतीय गृंथ निपेतन, 1966
हृदय पर पड़ी तथा यह आन्तरिक स्थ में छिपाया द विकला का अनुभूत करने लगा ।

इन विश्वासों से संबंधित उपन नाम करने से, उन की रचना के स्थाप्त के साथ संदर्भण जड़े
गृहीम्योग्य यह संदर्भण अपने परिवर्तन के उपर है । संदर्भण का यह स्वरूप व्यक्तत, विकला और विशेष सामाजिक निधन संपर्क एवं व्यापक पृथिवी में दिलेदा है । वह स्वरूप
में जीवन-रूपों के बदले मूल्यों का आवश्यक होता है । गोरखनाथ सचावस के मतानुसार "संदर्भण व्यापक के साथ बदलती रहती है । नवी व्यक्तियों ने व्यापक की आन्तरिक स्थितियों को संदर्भणात्मक स्तर पर अनेक स्वयं में खोजा है ।" 1

नवी कला की संदर्भण भावुकता तथा भूल हो तथा व्यापक वन गोरखनाथ
लेखनों ने छोटी-छोटी अनुभूतियों को विशेष संदर्भण यथा साथ रचना-व्यक्तित्व पर
उल्लेख किया । "कलाकार लग्नयोगी और ट्राडिशियों विशेषतः का प्रतिमा जिलनी
बैलों के बदले उत्तरी की रचना में रचना में सुधारे बेहतर होती । 2

नवी कला में परिवर्तन की मूल संदर्भण को उभराने का प्रयासी ही मूल की मूल
गया । कलाकार परिवर्तन के जीवन के मर्म-विशेष को उद्धारित करने के लिए ऐसी
विधियों संरचनात्मक छांटी कर करते, जिसके सामाजिक अनुभव का संबंध बढ़ा करना हो
जाता । ऐसी विधियों संरचनात्मक छांटी करने के लिए कलाकार को ऐसे गर्भात्मक-
समूहों की योजना करनी पड़ती, जो पात्र के विकास के कर पुरूसक
अवस्थाओं निर्धारित कर लेते । 3 संदर्भणा रचना गुण नहीं है, इस को उभराने के लिए छांटी कौशल दृष्टि और अंतर के एक छांटी लवली सहधरक करते हैं । अपने मानविक संस्कारों को उचित
विषयः में उन्मुख करने, उन संस्कारों को परिवर्तन कर के, ही मानवी संदर्भण का पौरष्य
विषय जा सकता है । 4

1. गोरखनाथ सचावस, नवी कला; उपलब्धि और धीमार, जयपुर; रामा परिवर्तिका
हाउस, प्रकाशन जयपुर, पृ-54.
2. शुभदास गुप्ता, आज की कला परिवर्तन का संकेत शेखर, मधुदति औपन्यास, विज्ञान, आत्म, तृतीया, उदयपुर; राजस्थान साहित्य अकादमी, मर्म, 1988, पृ-16
3. देवीशंकर अस्थि, नवी कला के अवस्था और पृथिवी, पृ.87, पृ-88
4. श्रीमत राय, कला की बात, एलाहाबाद; सतर्कता प्रकाशन, 1990-
पृ-41.
नयी कहानी का लेखक पात्र के प्रीति संवेदना बाहुळ करने के लिए, उसके
भर्ती को उद्देश्य रूप से । संवेदना-भाषा से भूल-प्रतिक्षा का परिणाम पहले हुए
लेख अपनी प्रतिक्षात्मकता का प्रदर्शन करता है तथा कहानी की प्रयास ज्ञाता को व्यक्त करता है।

1.4 नयी संक्षिप्तवर्णन सम्प्रेक्षणीयता

अनूठी हां तथापि लेखक के परिवर्तित समय में, कहानी को समृद्धि के लिए लेखक
भाषा, शिव और वैभव वैसे सहायक तत्त्वों को सही रहना पड़ता है। इसके कहानी भाषा के प्रति, उन्होंने भीले लेखक की रचना-प्रतिक्षा अनुभवों को बनाने में सहायता दी। नयी कहानी की रचना-प्रतिक्षा अनुभवों को बनाने में सहायता दी, उन तथ्यों का अनुभव अध्ययन है।

नयी कहानी का मुख्य ध्येय व्याख्या को प्रकट करना है। कहानी का व्याख्या
प्रकृति तक सीमित न रह जाँग वस्तुस्वरूप व्याख्यानों के रूप में व्याख्यात्तिक संकेतों के साथ
दूर दिया। व्याख्या-प्रकृति सांकेतिक प्रयोग द्वारा भी बन पड़ता है। यह संकेत वीदन
की व्याख्या का लगातार ध्यान का प्रतिक्रियाकार करता है। अनुभवों को कहानी के संकेत के द्वारा संकेत वीदन की ही है। संकेत-भाषा अपना प्रतिक्रियाग्रस्त है वह समाज और
वीदन के ध्येय की अभिव्यक्ति के साथ बुझ गयी।

संक्षिप्तवर्णन कहानियों की ही नहीं उसकी प्रतिक्रियाओं को भी मूल प्रीति तक
लेने को देखते हैं तीव्र विस्मृति देखते हैं। रचनाकार के भीतर मानसिक प्रत्ययावंतत की समस्या बराबर बनी रहती है। संक्षिप्तवर्णन कहानी चर्चा के प्रकृति में यह समस्या का सामान्य प्रकार का है। 2 रचनाकार अपने अनुभवों वातावरण संकेतों द्वारा करता है। संक्षिप्तवर्णन कहानी की अंध-वाता को प्रकट करना बने कहानीकारों को निर्देश विलापिका है। कहानीकार व्यक्तिमत्त्व तथा परिवेश के
अन्तर्वेशों की अभिव्यक्ति भी संकेतों द्वारा करता है।

1. दीरेंद्र सिद्धवन्धु, सोहन रायका का साहित्य, वण्डो; हैदराबादा
साहित्य आयोग, 1977, पुस्तक 89
2. दीरेंद्र सिद्धवन्धु, नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति, पुस्तक, पृ 132
लालितकृत रचनाकार की रचना-पुज्ञाया का अभिन्न अंग बन कर उभरती है।

यह नयी कहानी का आधार-हिन्दु है। यह जीवन के असल्य पक्ष, द्वारागृहीतानुसार अध-शैववादियों, कदृश-प्रसंगों तथा विद्वानों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन कर, लेखक की संवेदनशीलता के साथ भिंत कर कहानी में सम्मिलित होती है।

लालितकृत उपलब्धियों की दृष्टि से कुछ प्रमाण बताते ही के अपने हैं। नयी कहानी की संरचना किसी भाव यापनानुसार विपणन के लिए ही संकल्प नहीं करती अथवा अनुभव समूह वह कहीं ही संचालन बना देती है। यह पूरा स्मरण अर्थशास्त्र अथवा शिल्प गन्त ही संचालन के रूप में जाता है। सार्वजनिक अभिव्यक्ति हेतु नयी कहानी का निर्माण-विधान ही बदल डाला।

रचनाकार शिल्प द्वारा भाषाओं की मूर्ति सम देता है। सुगौलित और व्यासदूत अनुसार शिल्प-प्रयोग ही मूलतः प्रतीत करने में मदद होता है। नयी कहानी का व्यथा शिल्प द्वारा पात्र की दृष्टिकोण दशा का व्याख्यात्मक संचालन अंक से प्रतीत करता है, अन्तर्गत पाठकों को रचनाकार की सही अभिव्यक्ति का बोध लेके।

भाषा और लेखक के मध्य घटक जो भाषा द्वारा भाषा जा जा सकता है।

अनुभव और नयी साहित्य के मूल प्रेरणा-स्रोत है। इनको अथवा बदल कर का ही सार्वजनिक है।

रचना की भाषा "गुण की सृष्टि" की पहल करके वर्णान्त पाठकों को होनी पाएँ।

यहाँ भाषा में यह वर्णमाला नहीं होती। तो रचना का उद्देश्य के साथ है।

नयी कहानी का उपलब्धि का पुरुषनिधित्व करने वाले पात्र के पुरुष शब्द की वृत्तीय परम्परा बनाने वाले प्रसंगों को अधिक गहराई और व्याख्यात्मक अंक से अभिव्यक्तिकरण है। लेखक ने अपने आत्मसंयोग को अभिव्यक्तिकरण करने के लिए ऐसी भाषा की तलाश की है। जिसके उसके प्रायोगिक संसार का व्याख्यात्मक समाचार के साथ इसके।

1. लक्ष्मीनारायण लाल, हिन्दी कहानियों में शिल्प-विद्यार्थि का विवाह, पू.०-३३७
2. गोरखन तिः शैखात, नयी कहानी उपलब्धि और सीमाएँ, पू.०-०-७१
सम्मेलनीयता के लिए लेखक ने शैली-माध्यमों को भी अपनाता है। नयी कहानी के लेखक ने बात को सजाकर, संवारकर प्रस्तुत नहीं किया अपने उपभोक्ताओं के लिए ही नहीं किया। नयी कहानी में कथा ने स्वयं शैली का रूप दारांकर पूरी अभिव्यक्ति को ही शैलीय भाषा में दिया है। अतः शिल्प, भाषा, संस्कृति द्वारा कहानी की आन्तरिकता को पाठकों तक समर्पित किया जा सकता है, ऐसा ही नयी कहानी के कहानीकारों ने किया है।

निष्कर्ष: नयी कहानी की रचना-प्रक्रिया "अनुभव की निजता" को हे कर दली है। अनुभव के बिना अनुभव, जो लेखक के अपने बन गये, उसे ही यह प्रामाणिकता के साथ रचना-धरतिओं पर लखा। यह अनुभवों में केन्द्रित "व्यक्ति" बदलते परिवर्तन में अपनी निजता को खो जैता था। वह एकांकी तथा अनन्तीय दो कर दृढ़-उद्धर ध्यान-लगा। परिवर्तन की अदलती भानुधिका का प्रभाव भी उस पर पड़ा। लेखक ने "व्यक्ति" की आन्तरिकता को मार्मिकता के साथ विख्यात कर, उस के प्रपन्त संवेदना-भाव जागृत किया। लेखक ने व्यक्ति के मनोभावों को दृष्टि लेकर, विषयों, भाषा, शिल्प तथा कौशलों द्वारा कथा में परिवर्तित कर, पाठकों तक समर्पित किया है। व्यक्ति का व्याप्ति-वर्णन करते समय परिवर्तन परिस्थितियों का व्याप्ति वर्णन, संवेदना तथा साँकेतिकता के साथ करा। नयी कहानी के कहानीकारों की नवीन दृष्टि का परिपायन है।